B.A. I (Hons) Paper - Ist

Paper I

Topic- Sankara's 'doctrin of the world' |

Q:- Discuss Sankara's doctrine of the world. In what sense the world is unreal according to Sankara

प्रश्न:- शंकर के जगत या विश्व संबंधी विचार की व्याख्या करें। क्या शंकर के अनुसार जगत पूर्णतः असत्य है? स्पष्ट करें।

Ans:- भारतीय दर्शन में शंकराचार्य को अद्वैतवेदान्त का प्रवर्तक माना जाता है। इन्होंने अपने दार्शनिक विचार को पूर्णरूप से उपनिषद् के दार्शनिक विचार पर आधारित किया है। उपनिषद् में मूलतत्व के रूप में ब्रह्म को स्वीकार किया गया है और शंकराचार्य भी यह स्वीकार करते हैं कि ब्रह्म ही एक मात्र सत्य है। यह संसार अवास्तविक है तथा ब्रह्म और जीव दोनों अभिन्न हैं। "ब्रह्म सत्यम् जगत् मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः।" इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि शंकराचार्य इस विश्व को मिथ्या या अवास्तविक मानते हैं। इसप्रकार शंकर का विश्व-विचार अन्य भारतीय दार्शनिकों के विचारों से भिन्न है।

अब स्वभावतः प्रश्न उठता है कि शंकराचार्य ने जगत् को मिथ्या क्यों कहा है? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए शंकर के कारण-कार्य संबंधी विचार का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। उन्होंने कारण-कार्य सिद्धान्त के रूप में विवर्तवाद को स्वीकार किया है। जिसके अनुसार कार्य कारण का अवास्तविक रूपान्तरण है। उदाहरण के लिये रस्सी को साँप समझ लेना विवर्तवाद है। क्योंकि साँप के रूप में रस्सी का रूपान्तरण वास्तविक नहीं है। इसका विपरित सिद्धान्त परिणामवाद कहलाता है जिसके अनुसार कार्य कारण का वास्तविक रूपान्तरण है। उदाहरण के लिये दूध का दही के रूप में रूपान्तरण वास्तविक है। इसे मुख्य रूप से सांख्य दर्शन एवं रामानुज स्वीकार करते हैं। लेकिन विवर्तवाद तथा परिणामवाद दोनों ही सत्कार्यवाद के दो रूप हैं जो यह स्वीकार करता है कि कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में वर्तमान रहता है, इस विचार से सांख्य, शंकर तथा रामानुज तीनों सहमत हैं। लेकिन सांख्य और रामानुज के विचार को परिणामवाद कहा जाता है, तो शंकर के विचार को विवर्तवाद की संज्ञा दी

जाती है। साँख्य दर्शन प्रकृति-परिणामवाद में विश्वास करता है तथा रामानुज ब्रह्म-परिणामवाद में विश्वास करते हैं। अर्थात साँख्य के अनुसार सम्पूर्ण विश्व प्रकृति का वास्तविक रूपान्तरण है तथा रामानुज के अनुसार सम्पूर्ण विश्व ब्रह्म का वास्तविक रूपान्तरण है। लेकिन शंकर के विवर्तवाद के अनुसार सम्पूर्ण विश्व ब्रह्म का अवास्तविक रूपान्तरण है।

अब स्वाभावतः प्रश्न उठता है कि जब ब्रह्म सत्य है और विश्व असत्य है, तो सत्य ब्रह्म का रूपान्तरण असत्य विश्व के रूप में कैसे हो सकता है? ब्रह्म एक है, विश्व नानारूपात्मक है तो एक का रूपान्तरण अनेक में मानना हास्यास्पद है। ब्रह्म अपरिवर्तनशील है, विश्व परिवर्तनशील है, अपरिवर्तनशील ब्रह्म का रूपान्तरण परिवर्तनशील विश्व में मानना भ्रामक है। इन्हीं सारी समस्याओं के समाधान के लिए शंकर ने विवर्तवाद का सहारा लिया है। शंकर इस विश्व को ब्रह्म का विवर्त मानते हैं। जिस प्रकार अज्ञानता के कारण रस्सी को साँप समझ लिया जाता है, उसी प्रकार माया या अविद्या के कारण विश्व को वास्तविक मानते हैं। शंकर ने विश्व की व्याख्या के लिये माया का सहारा लिया है। माया ब्रह्म की वह शक्ति है, जिसके द्वारा वह विश्व का प्रपंच रचता है और ब्रह्म माया की उपाधि से युक्त होकर ईश्वर का रूप धारण करता है। जिस प्रकार एक जादूगर अपने जादू की प्रवीणता से एक सिक्के को अनेक सिक्कों में रूपान्तरित कर देता है, उसी प्रकार ब्रह्म अपनी माया शक्ति के आधार पर इस विश्व को प्रदर्शित करता है। अर्थात ब्रह्म एक महान जादूगर है। जो अवास्तविक विश्व को वास्तविक के रूप में प्रदर्शित करता है। माया के दो कार्य हैं:- (i) आवरण (ii) विक्षेप। माया ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप पर एक प्रकार का आवरण या पर्दा डाल देता है और उसके स्थान पर अनेक अवास्तविक स्वरूप को हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है। ब्रह्म विश्व का अधिष्ठान है। जिस प्रकार साँप रस्सी के वास्तविक

स्वरूप पर आवरण डाल देता है, उसी प्रकार माया ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप पर आवरण डाल देता है और उसके रूप का विक्षेप जगत् अर्थात प्रतीत होने लगता है। वस्तुतः ब्रह्म ही एक मात्र परमार्थ है और सम्पूर्ण विश्व ब्रह्म का अध्यास है। अर्थात जगत् ब्रह्म का आभास है। पाश्चात्य दार्शनिक ब्रैडले ने भी निरपेक्ष को परमार्थ मानकर जगत को आभास कहा है।

शंकर के जगत् संबंधी विचार को स्पष्ट करने के लिये, उनके द्वारा प्रतिपादित सत्ता संबंधी विचार को समझना आवश्यक है, शंकर ने सत्ता का विभाजन चार भागों में किया है-

(i) पारमार्थिक सत्ता (ii) व्यावहारिक सत्ता

(iii) प्रातिभासिक सत्ता (iv) तुच्छ सत्ता।

पारमार्थिक सत्ता उसे कहा जाता है जिसका अस्तित्व भूत, वर्तमान तथा भविष्य तीनों कालों में बना रहता है। यह त्रिकाल अबाधित होता है। इस सत्ता के अन्तर्गत शंकर ने ब्रह्म या आत्मा को ही परमार्थ माना है।

व्यावहारिक सत्ता वह है, जिसका अस्तित्व देश और काल में होता है और जिसको सामान्य को व्यावहारिक जीवन की सफलता के लिये स्वीकार करना आवश्यक है। व्यावहारिक सत्ता के अन्तर्गत उन्होंने जीव, जगत् तथा ईश्वर को रखा है।

प्रातिभासिक सत्ता के अन्तर्गत शंकर ने ऐसे पदार्थ को रखा जिसे हमें प्रतीति होती है, जैसे स्वप्न एवं विभ्रम की अवस्था। जिसका अस्तित्व क्षणिक होता है।

तुच्छ सत्ता के अन्तर्गत शंकर ने वैसे पदार्थ को रखा है, जिसके अस्तित्व के विषय में सोचा नहीं जा सकता है। उसके अस्तित्व के विषय में सोचने से विचार में विरोध प्रतीत होता है, जैसे - बंध्यामाता, वृत्ताकार चतुर्भुज इत्यादि।

उपर्युक्त चार प्रकार के सत्ता के अनुरूप शंकराचार्य ने चार प्रकार के दृष्टिकोण को स्वीकार

किया है — (i) पारमार्थिक दृष्टिकोण (ii) व्यावहारिक (iii) प्रतिभासिक दृष्टिकोण (iv) तुच्छ दृष्टिकोण।

पारमार्थिक दृष्टिकोण से सिर्फ पारमार्थिक सत्ता अर्थात् ब्रह्म या आत्मा ही सत्य है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से जीव, जगत और ईश्वर भी सत्य है। प्रतिभासिक दृष्टिकोण से प्रतिभासिक सत्ता अर्थात् स्वप्न तथा विभ्रम के विषय भी सत्य है और तुच्छ दृष्टिकोण से तुच्छ सत्ता जैसे - बंध्यापुत्र, आकाश-कुसुम इत्यादि भी सत्य है।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि शंकर के अनुसार यह विश्व पारमार्थिक दृष्टिकोण से असत्य तथा व्यावहारिक दृष्टिकोण से पूर्णतः सत्य है।

शंकर ने विश्व को पारमार्थिक दृष्टिकोण से असत्य सिद्ध करने के लिये निम्नलिखित तर्कों का प्रयोग किया है —

(i) जो वस्तु सर्वदा वर्तमान रहती है, उसे सत्य माना जाता है, परन्तु जो वस्तु सर्वदा वर्तमान नहीं रहती है, वह असत्य है। जगत की उत्पत्ति और विनाश होता है। इससे सिद्ध होता है कि जगत असत्य है।

(ii) जो देश, काल और कारण-नियम से स्वतंत्र है, वह सत्य है, इसके विपरीत जो देश, काल, कारण-नियम के अधीन है, वह असत्य है। जगत देश, काल, कारण नियम के अधीन रहने के कारण असत्य है।

(iii) जो अपरिवर्तनशील है, वह सत्य है, जो परिवर्तनशील है, वह असत्य है। ब्रह्म अपरिवर्तनशील है, इसलिए वह सत्य है, ~~[illegible]~~ इसके विपरीत विश्व असत्य है क्योंकि वह परिवर्तनशील है।

इससे स्पष्ट होता है कि शंकराचार्य पारमार्थिक रूप से केवल ब्रह्म को ही सत्य मानते हैं, लेकिन व्यावहारिक रूप से जगत भी सत्य मानते हैं।

शंकराचार्य के जगत विचार बौद्ध मत के शून्यवाद के जगत विचार से भिन्न है। शून्यवाद के अनुसार जो शून्य है, वही जगत के रूप में दिखाई देता है। परन्तु शंकर के मतानुसार ब्रह्म जो

सत्य है। यही जगत के रूप में दिखाई देता है। शून्यवाद के अनुसार जगत का आधार शून्य है, जबकि शंकर के अनुसार जगत का आधार सत् है।

शंकर का जगत विचार बौद्धमत के विज्ञानवाद के जगत-विचार से भिन्न है। विज्ञानवादियों के अनुसार मानसिक प्रत्यय ही जगत के रूप में दिखाई देता है, शंकर के अनुसार विश्व का आधार विज्ञानमात्र नहीं है। यही कारण है कि विज्ञानवाद ने विश्व को Subjective माना है, जबकि शंकर ने विश्व को objective माना है।

शंकर ने बौद्ध दर्शन की तरह विश्व को अनित्य और असत्य माना है। इसलिए शंकर को कुछ विद्वानों ने प्रच्छन्न बौद्ध भी कहा है।

Criticism:- कुछ विचारकों ने शंकर के जगत संबंधी विचार पर यह आक्षेप प्रकट किया है कि इन्होंने विश्व की व्याख्या देने के बदले "मिथ्या" मानकर इसकी समस्या को ही समाप्त कर दिया है। "In stead explaining the world Sankar has explained the world away." लेकिन यह आक्षेप निराधार है क्योंकि ऐसी बात नहीं है कि उन्होंने विश्व की व्याख्या न दी है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है कि विश्व पूर्णरूप से अवास्तविक नहीं है, व्यावहारिक जीवन की सफलता के लिये इसे वास्तविक मानना आवश्यक है।

प्रो० केयर्ड ने शंकर के विश्व विचार की आलोचना करते हुए कहा है कि शंकर के दर्शन में विश्व को सत्य नहीं माना गया है, जिसके फलस्वरूप अविश्ववाद (Acosmism) का विकास होता है। अतः शंकर का विश्व विचार असंगत है। लेकिन यह आलोचना भी निराधार है। क्योंकि उन्होंने कहा है कि जब व्यक्ति को ब्रह्म ज्ञान हो जाता है, वह विश्व की अवास्तविकता को जान लेता है, लेकिन जब तक हम व्यावहारिक स्तर पर हैं, हमारे लिये यह विश्व वास्तविक है।

शंकर का मोक्ष संबंधी विचार भी जगत की असत्यता का खंडन करता है। इन्होंने जीवन-मुक्ति की अवस्था को भी स्वीकार किया है। अर्थात मोक्ष प्राप्त करने के बाद भी व्यक्ति का

Scanned with CamScanner